

लेखकके अन्य कृति—

- \*कुमार — (उपन्यास)
- \*संन्यासी — (काव्य)
- \*विडम्बना — (कथा-संग्रह)
- \*गीता — (मैथिली पद्यानुवाद)
- \*बाभनक बेटी — (उपन्यास—प्रेसमे)

# रूबाइयात-ए-ओमर खैयाम

(मैथिली पद्यानुवाद)



—भी उपेन्द्रनाथ झा 'क्यास'



## भूमिका

पाँच वर्ष पूर्व श्रीयुत् रमानाथ बाबू, (प्राध्यापक, मिथिला कालेज) गणक प्रसङ्गे कहलन्हि जे स्व० अमरनाथ बाबूक बड़ इच्छा छलन्हि, मैथिलीमे 'ओमर खैयाम' क पद्यानुवाद होइत । स्व० अमरनाथ बाबू अंगरेजी साहित्यक त अगाध विद्वान् छलाहे, हुनका संस्कृत, हिन्दी, बङलाक सङ्ग उर्दू ओ फारसीओ साहित्यक असाधारण ज्ञान छलन्हि, ई विद्वद्गणकेँ ज्ञात छन्हि । हुनक अपन मातृभाषानुरागमूलक एहि इच्छाक पूर्ति जीवनकालमे नहि भए सकलन्हि, ई मैथिली साहित्यक लेल खेद ओ ग्लानिक विषय, कारण संसारक समस्त प्रतिष्ठित साहित्यमे 'ओमर खैयाम' क एकाधिक अनुवादक अनेको संस्करण प्रकाशित भए चुकल अछि ।

अपन कवित्व शक्ति, फारसीक एको अक्षरक ज्ञानक अभाव, एवं अङ्गरेजीओ साहित्यक कविताक मर्म बुझबामे अपन बुद्धिक सीमाकेँ ध्यानमे राखि, हम ने श्रीयुत् रमानाथ बाबूकेँ किछु कहलिनन्हि, मा'ने अपने दू वर्ष धरि एहि दिशि चेष्टे कएलहुँ । उत्सुकतावश बङला, हिन्दी एवं अङ्गरेजीक 'ओमर खैयाम' मझाओल अवश्य, किछु पढ़बो कएल-परन्तु एतबे धरि । सन् १९६३ क मार्चमे एकाएक एहि दिशि प्रवृत्ति भेल, अनुवाद आरम्भ कएल । करीब डेढ़ मासमे अनुवाद सम्पन्न भेल । पाछाँ सुनलहुँ, मैथिलीमे एक-दू गोटे एकर सम्पूर्ण वा किछु अंशक अनुवाद पहिनहुँ कएने छथि । एमहर आबि पुस्तकाकार एकटा प्रकाशितो भेल अछि ।

पहिले इच्छा छल जे मूल फारसीक गद्यानुवाद हिन्दी, उर्दू वा



( ख )

अडरेजिओमे भेटैत त वास्तविक अनुवाद करबाक चेष्टा करितहुँ । परन्तु उपलब्ध ग्रंथ सममे—एतेक तक जे खुदावक्स लाइब्रेरियोमे ई सुविधा नहि भेटल । अन्ततः 'ओमर खैयाम' क नहि, 'फिट्जेरॉल्ड'—कृत अनुवाद ( जे अनुवादक राजा बूझल जाइछ ) क अनुवाद कएल अछि ।

'रूबाइ' पद्यक विशिष्टता हीइछ जे एहि मुक्तक चतुष्पदीमे प्रथम दोसर ओ चारिम पंक्तिमे वर्णान्त भेल—तुकान्त रहैछ । 'फिट्जेरॉल्ड' महोदय एकर विलक्षण उपयोग कएलन्हि । हिन्दी ओ बङ्गलाक जे मोड़-चारिएक अनुवाद हमरा उपलब्ध छल ताहिमे एकर अभाव देखना गेल । परन्तु अपन कृति सम्पन्न भेलाक डेढ़ वर्षक बाद हमरा राष्ट्रकवि 'गुप्त' जीक हिन्दी अनुवाद भेटल जाहिमे ओ 'रूबाइ'क मर्यादाक रक्षा कएने छथि ।

हम अपन अनुवादमे ई वैशिष्ट्य राखल अछि, संगहि यत्र तत्र पद्य समष्टिक मात्रा ओ आकारमे किछु विभिन्नता आनि क्रम-शील्य—'मीनो-टोनी'—हटैबाक सेहो प्रयास कएल अछि ।

पद्यानुवादमे यथासम्भव भाव एवं अर्थकेँ अक्षुण्ण रखबाक प्रयत्न कएओ उत्तर कतहु कतहु देशकालानुसारें सौन्दर्य अनवाक हेतु किछु परिवर्तन सेहो कएना गेल; एकर औचित्यक विवेचन मर्मज्ञ पाठक करताह । रूबाइयातक पहिलुक अनुवादक कविकुल—विशेषकए बङ्गलाक श्री नरेन्द्र देव ओ हिन्दीक श्री वल्लभजी, जतिक पुस्तकसँ हमरा बेस प्रेरणा ओ सहायता भेटल अछि—केँ सादर धन्यवाद दैत छियन्हि । हिनका लोकनिक चिरश्रृङ्खला रहबन्हि ।

पुस्तकमे किछु रेखाचित्र डेल गेल अछि जकर श्रेय छन्हि राँचीक तरुण कलाकार श्री अल्लाउद्दीनकेँ । पुस्तककेँ छपएबामे अत्यधिक

( ग )

सहायक भेल छथि हमर मित्र श्री अशर्फी मिश्रजी । एहि दूनु व्यक्तिक प्रति हम अत्यन्त आभारी छी ।

फारसी भाषा ओ संस्कृतिसँ जहिना मैथिली भाषा ओ संस्कृति भिन्न, तहिना 'ओमर खैयाम' क विचारधारासँ हमरालोकनिक—मैथिलक—विचारधाराभिन्न । तथापि रूबाइयातक कवित्व, सरसता, साहित्य-सौष्ठव, एकर काव्य-माधुर्य, जे विचार-सरणि, भाषाक विभिन्नता एवं संस्कृतिक भेदभावक सीमाकेँ अतिक्रम कए समस्त विश्वक सुधी समाजकेँ चमत्कृत कएलक अछि, मैथिली समाजकेँ आकृष्ट करओ, इएह हमर अभिलाषा ।

सभ तरहें अक्षम रहैत, एहि महान् कृतिक मैथिली रूपान्तर करबामे यदि हम किछुओ सफल भेलहुँ अछि त ओहि महान् मैथिल आत्मा स्व० अमरनाथ बाबूक आशीर्वादसँ—हम त सएह बुझैत छी ।

राँची

मधु-पूर्णिमा

१३७३ साल

( ५-४-१९६६ )

—अनुवादक



## ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार—किछु परिचय ।

कवि भवभूति बहुत पहिनाह लिखने छलाह—उत्पस्यते च मम कोषि  
समानधर्मा, कालोद्भयं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ।

‘ओमर खेयाम’ क प्रसिद्धि एवं हुनक ‘रुबाइयात’क विश्वमे प्रचार-  
उपयुक्त भवभूतिक उक्तिके यथार्थ चरितार्थ करैछ ।

‘ओमर खेयाम’ पशिया (फारस) देशक खोरासान प्रान्तक नैशापुर  
ग्राममे जन्म लेलन्हि, आठ-सावा आठ सए वर्ष पूर्व—ई० एकादश  
शताब्दीक प्रथमाद्वये । हिनक जन्म तिथि निश्चितरूपे एखनो तक  
ज्ञात नहि; मृत्युक विषयमे समरकन्द निवासो फारसीक प्रसिद्ध कवि  
निजामीक लेखसँ पता लगैछ जे ओमर खेयामक देहावसान हिजरी सन्  
५१२-अर्थात् ११२३-२४ ई०) मे भेलन्हि । यद्यपि अपनो देशमे, मृत्युक  
बादो, कए गोट साहित्यक मनीषी हुनक नाम, कविता एवं अन्यान्य  
विषयक प्रसंगमे उल्लेख कएने छलथोन्ह, परन्तु संसारक साहित्यिक  
आकाशमे जाज्वल्य नक्षत्रक रूपमे हिनका प्रकाशित एवं प्रतिष्ठित करबाक  
धेय छन्हि—इङ्लैण्डक कवि ‘फिट्जेराल्ड’ महोदयके, जे केवल हिनक  
पञ्चहत्तरि रुबाइयातक अङ्गरेजी पद्यानुवाद कए सर्वप्रथम १८५६ ई० मे  
प्रकाशित कराओल, एवं आधुनिक काव्य जगतक समक्ष आनल ।

‘ओमर खेयाम’क असल नाम छलन्हि ‘गयासुद्दीन अबुल फतह  
ओमर इब्न इब्राहिम अलखेयामी’ । इब्राहिम हिनक पिताक नाम, खेयामी

( ६ )

वंश-उपाधि । दक्षिण भारतीय जेकाँ वंश, पिता, स्थान सभक परिचय  
नाम कहनहि ज्ञात भए जाएत । ‘खेया मी’ सँ साधारणतया लोकके  
बुझि पड़ैछ—जनिक वंशज खीमा-तम्बू-आदि बनबैत छलथोन्ह । ई अपने  
साधारण खीमा निश्चय नहि बनबैत छलाह—कतेको विद्वानक कथ्य छन्हि  
जे ओमर, सम्भव थीक, अपन उपाधि कि उपनाम एहिने रखलन्हि जे  
चारि खान्हावाला, चारिपदक ई शब्दक सुन्दर कविता रूपक खीमाक  
रचना करैत छलाह ।

ओमरक माता पिता कि पूर्व पुरुषक विषयमे किछु उपलब्ध नहि  
होइछ । पाठावस्थाक सम्बन्धमे किम्बदन्तीक आधार पर बुझना गेल  
अछि जे ई खोरासानक प्रसिद्ध इमाम मओजाबिबकुद्दीनसँ शिक्षा लाभ  
कएलन्हि । गुरुसँ ज्ञानोपार्जन कएने होएताह सन्देह नहि, परन्तु हिनक  
अपने असाधारण बहुमुखी प्रतिभा, अद्भुत स्मरणशक्ति ओ अनेक शास्त्रमे  
पाण्डित्य, पशियाक सम-सामयिक वा बहुतो वर्ष पश्चात्तोक विद्वद्गणके  
आकृष्ट कएने छल । ई केवल एक निर्भय, स्वतन्त्र विचारक,  
स्पष्टवादी उच्चकोटिक कवि ए टा नहि छलाह, ई दार्शनिक छलाह, आ  
छलाह विख्यात वैज्ञानिक, गणित-ज्योतिषविद् । अपन समयमे तत्कालीन  
हाद्विधर्म, विश्वासक विरुद्धो विचार रखबाक कि लिखबाक कारखो  
कविरूपे हिनक तेहन प्रतिष्ठा नहि भेल छलन्हि जतेक कि  
ज्योतिषीरूपे । जीवनक अन्तिम अंशमे पशियाक पंजिका-शोधनकार्यमे  
ई सहायक भेल छलाह—एवं जिजि-मालि कशाही नामे ज्योतिष सिद्धान्तोक  
प्रणयन कएने छलाह । से छोड़ि, गणित एवं जीवशास्त्र पर कए गोट  
ग्रन्थक स्वतन्त्र वा संयुक्त रचना हिनक मानल जाइछ ।

हिनक अधिकांश रुबाइमे प्रचलित धर्म-पद्धति पर अविश्वास एवं  
अनिष्ठा परिलक्षित होइछ, धर्मगुरु मुल्ला आदिक पाखंड वा आडम्बर  
पर कटाक्ष बूझि पड़ैछ । ते तत्कालीन समाजमे ई लोकप्रिय नहि भए



( ब )

सकलाह। किन्तु हिनक प्रतिभा एवं ज्ञानक आदर करए वाला गुणग्राही व्यक्ति नितान्त अभाव छल, से नहि। कतेको हिनका गुरुतुल्य बूझि गौरवक अनुभव करथि। समरकन्दक प्रसिद्ध साहित्यिक—निजामी आरुजी—अपन ग्रन्थ 'चाहारमाकला' मे हिनका प्रसंगमे लिखने छथि "जानि-श्रेष्ठ ओमर खैयामक मृत्यु ५१ हिजरी संबतमे भेलन्ह। दर्शन ओ विज्ञानमे ई अद्वितीय छलाह। प्रातर्भ्रमणक समय अधिक काल हुनकासँ फुलवाड़ीमे भेट होइत छल, अनेक विषय पर चर्चा-आलोचना चलए। एक दिन ओ कहने छलाह 'हमर कब्र एक एहन स्थान पर बनैत जतए कुलुभित तरु-राजि हमर समाधि पर पुष्पाञ्जलि अर्पण करैत।' ओहि दिन हुनक एहि बातकेँ कविक कल्पना बूझि हम हँसिकए उड़ा देने छलहुँ, परन्तु महाकविक मृत्युक किछुए वर्षक बाद जखन हम नैशापुर गेलहुँ त इच्छा भेल गुरुजीक समाधिपर अद्याञ्जलि अर्पण करी। ओही उद्यानमे देखल, हुनक समाधि पर जेना शाखा प्रसारित कए तरु-राजि पुष्पाञ्जलि दैत हो। खसल, छिड़िआएल पुष्पराशिसँ कविक कब्र-पाषाणवेदी भरल छल। ..... हुनक अपन भविष्यवाणी, हुनक आन्तरिक अभिलाषाकेँ एहि रूपेँ प्रतिफलित देखि हम हर्षातिरेकसँ विभोर भए गेल छलहुँ।"

'ओमर खैयाम'क कविता—रूबाइ—चतुष्पदी मुक्तक अछि जकर प्रथम, दोसर, चारिम पंक्तिमे तुकान्त रहैछ। फारसीमे एकर वेश चलतो, अङ्गरेजिओमे कतेको कवि एहि तरहक छन्दो-रचनामे निपुण छलाह। हिन्दीमे महाकवि जयशंकर प्रसाद पर्यन्त कामायनी महाकाव्यमे एक समस्त सर्ग 'स्वप्न' एही छन्दमे लिखने छथि; मैथिलीमे अवश्ये एहि छन्दक बड़ ओड़ व्यवहार भेल अछि।

'खैयाम'क कोनो क्रमबद्ध काव्य, कि महाकाव्य नहि छन्हि। विशेष मुक्तक—फुटकर सएह। हुनक मृत्युक पचहत्तरि वर्षक बादक लिखल

( छ )

पाण्डुलिपिमे २५० मात्र रूबाइ भेटैछ। ऑक्सफोर्डक 'बोडलियन' लाइब्रेरीमे उपलब्ध फारसीक पाण्डुलिपिमे १५८ मात्र रूबाइ छलन्हि जे प्रोफेसर कविल, फिट्जेराल्ड महोदयकेँ पठओने छलयोन्ह। पाछाँ किछु वर्ष पश्चात्—एसियाटिक सोसायटिक पाण्डुलिपिमे ५१६ रूबाइ भेटल आ' क्रमहि, यूरोपीय विद्वान ओ अनुसन्धानवेत्ताक प्रयासेँ करीब १२०० रूबाइ आव हिनक लिखल कहल जाइछ। अवश्य, बहुतो गोटाक धारणा—जे एहिमे महाकवि ओमरक लिखल आठसएसँ বেশी नहि छन्हि; बाँकी ४०० हुनके नाम पर प्रक्षिप्त थोक। ई असम्भव नहि; कतेको अनको रचल गीतमे "भनहि विद्यापति"—कि "सुरदास प्रभु तुम्हरे दरसको"—हमरो लोकनिकेँ श्रुतिगोचर होइतहि अछि।

यूरोपमे 'रेनासाँ'क क्रममे साहित्यक क्षेत्रमे तीव्र जिज्ञासा जागृत भेल। अपन वाश्चात्य वस्तु, विचार एवं साहित्यमात्रसँ सन्तुष्ट नहि भए, ओ लोकनि प्राच्य वस्तु समदिशि झुकलाह, अन्वेषण करए लगलाह। जतए नोक ग्रन्थ भेटन्हि अनुवाद करथि, ओकर प्रचार करथि, स्वयं अपन ओ अपन साहित्यक गौरव वृद्धि करथि। उनैसम शताब्दीक मध्यमे जखन फिट्जेराल्ड महोदयकेँ 'ओमर खैयाम'क रूबाइयातक पाण्डुलिपि भेटलन्हि, ओ मुग्ध भए गेलाह। स्वयं एक सरस कवि छलाह। ओहि १५८ रूबाइक सार लए, केवल ७५ चतुष्पदी मात्रमे अनुवाद कएल जे सर्वप्रथम १८५६ ई० मे प्रकाशित कराओल। पहिने एहि दिशि लोक तत्तेक ध्यान नहि देलक। प्रथम संस्करणक २५० प्रति मात्रो ओहिना पड़ल रहल—फेकले सन गेल। किन्तु किछुए दिनक बाद जखन विद्वान्मण्डलीक ध्यान एहि दिशि आकृष्ट भेल त पाश्चात्य काव्य-जगतमे एक रूपेँ हूँल उठि गेल। फ्रेञ्च, जर्मन, रूसी आदि भाषामे अनुवाद—एकक बाद दोसर, होअए लागल, अनुसन्धान कार्य आरम्भ भेल। स्वयं फिट्जेराल्ड अपन जीवनकालमे एकर तीन आओर



( ज )

संस्करण प्रकाशित करायोल्ह—प्रत्येक बेरि किछु-किछु भिन्न रूप दए,  
बपना मने यथासाध्य नीक बनएवाक चेष्टा करैत। परन्तु हुनक प्रथम  
प्रकाशन सएह सर्वोपरि बुझल जाइत छन्हि।

फिट्जेरॉल्ड पद्य सभहिक अविकल अनुवाद नहि कएलन्हि। अनेको  
कवितामे रुबाइक एक आध पांतीके लए, अथवा ओकर भावके लए  
स्वयं एक सुन्दर कविता बनओलन्हि, कतहु दू-दू, तीन-तीन कविताक  
सार ग्रहण कए एकमात्र चतुष्पदीमे बन्हलन्हि। एतबे नहि, ई  
पंचहत्तरिओ कविताके एहिरूपे लिखलन्हि जे बूझि पड़ैछ जेना ई  
क्रमबद्ध हो—एक प्रकारक विचारधारा प्रस्तुत करैत हो। ई हिनक  
विलक्षणता छल।

अनुवादमे कविके मूलसँ विचलित भइए जाए पड़ैत छैक।  
प्रत्येक भाषाक अभिव्यञ्जनाना-शक्ति भिन्न होइत छैक, प्रत्येक  
कविक अपन वैशिष्ट्य होइत छैक, ते मूलक निकटतम रहबाक  
चेष्टा करैत किछु विभिन्नता भइए जाइत छैक। अनेको स्थलमे ओ  
सौन्दर्य-वर्द्धक सिद्ध होइछ। किन्तु फिट्जेरॉल्डक अनुवाद मूलसँ  
कएठाम बहुत दूर चल गेल जकर किछु उदाहरण देल जाइछ :-

(१) मूल फारसी—

हैगामे सुबुह अस्त व खोरोश ऐ शाकी,  
माव भय व कय मय फरोश ऐ शाकी।  
वे जाये सलाह अस्त, खामोश ऐ शाकी,  
बुगरजे हदोशो, दर, नोश ऐ शाकी ॥

( पद सं० ३ )

अर्थ—

प्रातःकालक समय थीक। हल्ला गुल्ला भए रहल अछि। हम छी,  
ई मदिरा ( शराब ) अछि, ओ शाकी ( मदिरा बाँटए वाला ) अछि।

( क )

महाँ की ई ( अलाए बलाए ) राय विचार दए रहलहुँ अछि, चुप  
रहू।

फिट्जेरॉल्ड महोदयक अङ्गरेजी अनुवाद—

And as the cock crew, those who stood before  
The Tavern, shouted - 'open then the door;  
You know how little while we have to stay,  
And, once departed, may return no more.'

(२) मूल फारसी—

असरारे अजल, राज तु दानी व नमन  
बो हरफे मोअम्मा न तु खाना व नमन  
हस्त अज पसे पर्दा गुप्तगूँ मनो तु  
चू पर्दा बर ओफ्त न तु मानी नमन ॥

(पद सं ३२)

अर्थ—

सृष्टिक पूर्वक भेदके ने अहाँ जने छी ने हम जने छी। एहि  
रहस्य—पहेलोक बातके ने अहाँ पढ़ि सकैत छी ने हम पढ़ि सकैत  
छी। पर्दाक पछासँ हमरा आ' अहाँक बीच किछु बात भए रहल  
अछि; पर्दा हँटि जाए त ने हम रहब ने अहाँ रहब।

अङ्गरेजी अनुवाद

There was a Door to which I found no key,  
There was a Veil past which I could not see,  
Some little talk a while of Me and Thee  
There seem'd - and then no more of Thee  
and Me.



( ज )

( ३ ) मूल फारसी—

नेकी व बदो के दर ने हादे बशर अस्त,  
शादी व शमे के दर, कजाओ कंदर अस्त ।  
बा चर्ख मकुन हवाला कंदर रहे अवल,  
चर्ख अज तु हजार बार बेचारा तरस्त ॥

( पद सं० ५२ )

अर्थ—

नीक वा अवलाह मनुष्यक स्वभावमे छैक, सुख ओ दुःख (जीवनक)  
आवश्यक अज्ज छैक । आकाशक भरोसे कोनो काज नहि करू, किए  
त बुद्धिक विषयमे ओ (आकाश) अहूँसे शक्तिहीन अछि ।

अङ्गरेजी अनुवाद—

And that inverted Bowl we call the sky,  
Where under crawling copt we live and die;  
Lift not thy hands to it for help—for it  
Rolls impotently on as thou or I.

उपर्युक्त किछु उद्धरणसँ बूझल भए जाएत जे फिट्जेराल्ड  
केहन स्वतन्त्र रूपेँ अनुवाद कएने छथि । भए सकैछ हिनका मूल  
फारसीक सभ शब्द ओ भावक पूर्ण अर्थ नहि लागल होइन्हि, भए सकैछ,  
सभ वस्तुकेँ बुझिओ कए ई अपन अनुवाद एहने स्वतन्त्र रूपेँ  
कएलन्हि । सुन्दर ओ आकर्षक हिनक अनुवाद एहने भेल जे मूल फारसी  
कविताक शब्देटाकेँ नहि, भावोकेँ लोक बिसरि गेल अछि, आब  
'ओमर खैयाम'क रूबाइयातक अर्थ होइछ—'फिट्जेराल्ड'क अनूदित कविता ।

( ट )

यूरोपीय विद्वान् लोकनि जे एहि मध्यपूर्वीय काव्यरत्नकेँ पावि नाचि  
उठलाह, तकर कारण साहित्य-सौन्दर्यक भर्मज्ञता छलन्हि, ताहिमे  
सन्देह नहि, किन्तु ओहूँसे बेसी हुनका लोकनिकेँ पूर्वीय देशसँ  
एहन सामग्री, दार्शनिक विचार भेटलन्हि जे हुनका सभहिक तत्कालीन  
विचारधाराक मनोनुकूल छलन्हि, ओही भेलक छलन्हि । ओमर खैयामक  
कवितामे पुनर्जन्म, मृत्युक बाद कोनो रूपेँ कर्मक फलभोग आदि विषय  
पर नितान्त अनिष्टा अछि; सज्जहि ई विचार देख, जीवन भरि  
आनन्दपूर्वक रहू, खाउ खेलाउ, मौज करू, एपिगुरियन वा चार्वाकी  
सिद्धान्त,—'यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्' सन । साधारण तरहें इस्लाम बताव-  
लम्बी मुसलमान लोकनि अपन धार्मिक भावनामे कट्टर होइत छलाह, होइत  
छथि । हुनका सभहिक शास्त्रमे मदिरा पीब नितान्त गहित, वर्मविस्म  
आचारहीनता, आ' से ओमर खैयाम, मुसलमान भए जखन एहि विषय  
पर एहन अनिष्टा देखओलन्हि, एहतरहक धार्मिक आडम्बर पर व्यङ्ग  
कएलन्हि, कुठाराघाते कएलन्हि, तखन तत्कालीन यूरोपीय बुद्धिजीवीकेँ  
अपन आचार विचारक पृष्ठपोषक, समर्थक रूपमे आ'र चाहिअन्हि की ?  
ओना पाछाँ आबि एकाधिक विद्वानकेँ खैयामक कवितामे गूढ़ रहस्य,  
आत्मा-परमात्माक सम्बन्धमे प्रच्छन्न विवेचन, सूफीमतक छाप आदि  
बात भेटैत छन्हि, किन्तु साधारणतया ई ग्राह्य करब कठिन ।

ओमर प्रकृति - सौन्दर्यक उपासक छलाह, प्रकृतिक गरिमापर  
मुग्ध होइत छलाह । भए सकैछ, हुनका लोकनिक तत्कालीन समाजमे  
घमडिम्बर, अन्धविश्वास चरम सीमा पर चल गेल छल, जकर प्रतिक्रिया  
हिनका मनमे भेल होइन्हि । दोसर, सम्भव थोक, हिनका जीवनमे कटु  
अनुभव भेलन्हि, अपन बुद्धि ओ ज्ञानक अनुपातमे आशातीत सफलता नहि  
भेटलन्हि, वा कतेको कार्यमे निराश होअए पड़लन्हि, भाग्यक इशारा पर  
नाचए पड़लन्हि, तेँ नियति पर व्यंग आ' मनकेँ कलुषित नहि कए,



कष्ट नहि दए,—सम्प्रति जे उपलब्ध अछि ताहीसँ जीवनकेँ आनन्दमय बनएबाक चाही—इएह कहबाक चेष्टा कएलन्हि अछि ।

ओमर एकदम निरीश्वरवादी छलाह से कहब कठिन । कतेको हुनक भण्य कवितामे ईश्वर एवं अदृश्य महान् सत्ताक प्रति आस्था भेटत । भए सकैछ, युवा वा प्रौढ़ अवस्था 'यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्' रूपेँ बिताए, पाछाँ अवस्था ढरला पर, ओहि सिद्धान्तक असारता बूझि, अनन्यशरण ईश्वरक प्रति - "ढर नहि सम बढ़िजे होएत, छवि स्वामी अपन कुपालु"—निष्ठा भेल होइन्हि । एकटा अवश्य, ई जे सोचेत छलाह कि करैत छलाह से निश्चल, निर्भय चित्ते । ईश्वरक प्रति वृद्धोवस्थामे जे आस्था भेल होएतहि तँ दृढ़ रूपेँ । शुद्ध अन्तस्तलेक फल छल जे दिनक समाधि पर प्रकृति पुष्पाञ्जलि अर्पण कएल करए ।

जे किछु, यदि अपन देशवासी मृत्युक उपरान्तो हुनक कवित्व-शक्ति एवं काव्यकेँ गोख बूझि, हुनका केवल गणितज्ञ, ज्योतिषी एवं दार्शनिक रूपेँ आदर कएलथोन्ह, त ओकर विपरीत आधुनिक समस्त संसार हुनक वैज्ञानिक विचक्षणताकेँ विसरि, हुनका कवि-सम्राट् रूपेँ पूजा करैछ । हुनक 'रुबाइयात'क रसास्वादनसँ चिरअतृप्त रहैत विश्वक सुधी समाज कृतकृत्य होइछ । इएह त महान् कविक विलक्षणता थीक ।

—इत्यलम् ।



मिहरी ठह

! साहज शान्ति





उठु प्रियतमे.....

..... मीनार महान !

॥ श्रीः ॥

॥ रुबाइयात-ए-ओमर खैयाम ॥

( १ )

उठु प्रियतमे ! नैश-तम-भाजनमे अरुणिम पाषाण  
फेकल उषा, पड़ाएल उड़गण, क्षिप्रचरण मुखम्लान ।  
देखु प्राच्य-आकाश-शिकारी किरणक जाल पसारि,  
कोना फँसाओल सुन्दर सुल्तानक मीनार महान !

( २ )

जखन अलस ऊषाक बामकर श्लथ पसरल आकाश,  
सपना सुनलहुँ—मधुशालासँ केओजन करुण निराश-  
स्वरसँ कहइछ—तरुण ! जागु अरु भरि भरि पीबिअ पात्र,  
तनु-वषकक जीवन-मधु-शेषक पहिनहि भोग बिलास !



( ३ )

अरुण शिखा धुनि सुनितहि ऊठल, पान्थ सकल भए ठाढ़,  
मधुशालाके घेड़ि कहए लागल—भट खोल केवाड़;  
जनइत छे, कत थोड़ समयले छी हमसभ एहिठाम !  
भए सकैछ, पुनि घुरि नहि आएब, जखन घरब पथधार ।

( ४ )

नूतन वर्ष समागत, उपगत आकांक्षा उल्लास,  
विज्ञ मनोषी चलल शान्तचित शुभ एकान्त निवास ।  
जतए पवित्र-ज्योति-युत-मूसा कर-पल्लवित प्रशाख,  
अरु निर्गत ईशाक अवनितलसँ सकरुण उच्छ्वास ॥

पद सं० ४—हजरत मूसाक हाथसँ ज्योति बहार होइत छलन्हि  
आ' ईशाक श्वासमे मृतकोके जौवित करवाक शक्ति छलन्हि ।

( ५ )

गेल सकल पाटल प्रसूनसङ ओ एरमक उद्यान !  
ककरा जात — कतए जमशेदक सप्तचक्रद्युतिमान-  
मन्त्रपात्र ! अछि किन्तु लतासँ प्राप्त रत्न अङ्गूर,  
एखनो सुमन वाटिका लहलह सलिल सङ्ग छविमान ॥

( ६ )

युग युगसँ अछि बन्द ओठ, दाऊदक सुमधुर गान,  
किन्तु अमर बुलबुल-कलकण्ठक निस्सृत पञ्चम तान  
कहइछ—सुरा, सुरा, मधु, रवितम मदिरा पीबि गुलाब,  
होएत पीत कपोल अहँक कोमल, अरुणिम, अम्लान ॥

पद सं० ५—एरमक उद्यान—शदादनामक राजाक लगाओल  
अरबक मरुस्थलमे गुलाबक फुलवाड़ी—जे लुप्त भए गेलैक ।

जमशेदक...मन्त्रपात्र । राजा जमशेदके एक सात चक्रवाला  
पात्र (प्याली) छलन्हि जाहिसँ सातो लोक, सातो समुद्र, नक्षत्र आदिक  
विषयमे ज्ञान भए जाइत छलैक ।

पद सं० ६—दाऊद—एक पैगम्बर जे गान विद्यामे अत्यन्त निपुण छलाह ।



( ७ )

आउ, भरु मधुपात्र प्रिये, ऋतुराज अनल प्रज्वाल,  
फेकि शिशिर परिताप पापमय मलिन वसन जञ्जाल ।  
समयक पक्षीके उड़वा ले' पथ नहि बेसी दूर—  
अरे ! जा-आ-आ-आ-ह ! ओ पाँखि पसारल उड़वा ले तत्काल !

( ८ )

शतशत कुसुम प्रस्फुटित, विकसित, होइछ जखन प्रभात,  
अरु असंख्य सुमनक दल भरइछ अवन्तिक तल अज्ञात ।  
पाटल-नवल-प्रसूनक डाला आनए जे मधुमास,—  
लए जाएत ओ कैकुबाद, जमशेद प्रभृति विख्यात ॥

पद सं ५—कैकुबाद—सेलजुक वंशक एक प्रसिद्ध सुलतान ।

( ९ )

कैखुसरु वरभूपक स्मृति वा कैकुबाद सुलतान,  
बिसरि जाउ, रुस्तम आदिक, जत परमवीर बलवान ।  
हातिमताइक भोज तथा सौजन्यक जनु कर लोभ,  
प्रिये ! आउ खैयाम सङ्ग निश्चित करिअ मधुपान ॥

( १० )

चलु एकाकिनि सङ्ग हमर सखि, जतए सुकोमल घास  
शस्य भूमि अरु मरुस्थलक बिच लताकुंज विन्यास ।  
जतए न केओ राजा न रंक, नहि प्रभु न किकरक नाम  
बादशाह महमूद तुच्छ, जत' ई सौभाग्य विलास ।

पद सं ६—कैखुसरु—फारसक एक प्रसिद्ध राजा ।

रुस्तम—फारसक एक प्रख्यात वीर ।

हातिमताइ—अरबक सरदार जिनकर अतिथि-सत्कार  
प्रसिद्ध अछि ।



( ११ )

एतए पड़ल तरु-वन छायातर शादल पर एकान्त,  
भरल पात्र मधु, भोज्य वस्तु किछु, सरस काव्य, चित्तशान्त,  
अरु लगभे बैसलि प्रेयसि ! अहँ गवइत मृदु सङ्गीत,—  
निर्जन वन हमरा सभहिक हित नन्दन बनत नितान्त ॥

( १२ )

सोचथि बहु, सुन्दर सुख भोगव पार्थिव सौख्य पदार्थ,  
अन्य स्वर्ग सुख दुर्लभ ब्रूथि, करथि त्याग, परमार्थ ।  
त्यागि अदृश्य भविष्य मोह, अहँ भोग करिअ जे प्राप्त,  
'दूरक ढोल सोहाओन' उक्तिक होइछ एतए चरितार्थ ॥

( १३ )

देखु चतुर्दिश विकसित पाटल पुष्प कहैछ सहास—  
अनिल संग हम भूमि रहल छी; जगबिच अछि उल्लास ।  
खोलि अपन कौशेय-कोषिका संचित निधि सानन्द,  
पुटा दैत छी उद्यानक बिच, निज मधु गन्ध विलास ॥

( १४ )

सांसारिक आशा, आकांक्षा, नर-जीवन-आधार,  
होइछ विफल—सभ क्षार !—आ'र यदि कथमपि ओ साकार  
फलित होअ, तँ, अल्पकालने ओकर तुष्टि, आनन्द,  
जिमि चमकए धूसर मह ऊपर क्षण भरि शुभ्र तुषार ॥



( १५ )

कएल कृपणता जीवन भरि, राखल जे केओ स्वर्णक भंडार,  
अथवा जे केओ खूब बहाओल धन सम्पति जनु पानिक धार ।  
हुनू व्यक्ति मृत्युक पर पृथ्वी-रज साधारण होअ' विलीन,  
नहि केओ बनत स्वर्णरज सन, जे कोड़ि करत मानव व्यवहार ॥

( १६ )

सोचिअ हम, मानव यात्री हित ई संसार सराय पुरान,  
जकर विशाल द्वार निशि वासर, क्रमशः चन्द्र, सूर्य्य द्युतिमान ।  
कत सुल्तान, शाह वर भूपति ऐश्वर्य्यक सुख भोग विलास  
कएल मात्र दुइ चारि दिवस धरि, पुनि सभ निज पथ कएल प्रयाण ॥

९

( १७ )

जमशेदक मदिराखण लोचन दर्प भरल छल जे दरबार,  
आइ सरीसृप, बन्य हिंस्र पशु करए ततए आवास विहार ।  
अतुल-लक्ष्य-भेदी बहराम शिकारी जनिक जगतमे ख्याति-  
पड़ल कबमे, माथक ऊपर बनगदहा खुर करए प्रहार ॥

( १८ )

सोचिअ कखनहुँ—तेहन लाल नहि हो सभ थलक गुलाबक फूल,  
जेहन, जतए सीजर सन वीरक शोणित सिंचित अछि तरुमूल ।  
अरु प्रत्येक लता सङ्ग सुमनक वृन्त देखिकए होइछ भान,  
जनु सुन्दरिक कुसुम गुम्फित कुन्तल पसरल उद्यान दुकूल ॥

पद सं० १७—बहराम—फारसक बादशाह, अत्यन्त कुशल शिकारी  
जे ससरफानी फेकि घोड़गदहाकेँ अद्भुत कौशलसँ फँसा लेथि ।

पद सं० १८—सीजर—रोमन साम्राज्यक महाप्रतापी सम्राट्—जे  
अपन मित्रवर्गहि द्वारा मारल गेलाह ।



( १९ )

केहन सुकोमल मृदु कमनीय हरित नवदल धनश्याम,  
सरिता-तट-अधरक आच्छादन कए रमणीय ललाम ।  
चलइत छी हम सभ एहिपर, चलु धीर पदे सुकुमारि,  
के जनैछ, ई ककर अधर-रससँ उपगत अभिराम !

( २० )

आह ! प्रिये भरि भरि प्याली मदिरा पिआउ अहँ आज,  
भूतक सभ अनुताप, अविष्यक आशंकाक न काज ।  
काल्ह ! अहँह-काल्हक न बात कर, के जनैछ हम काल्ह,  
बिलल असंख्य काल्ह कालक वश, मिलब न विगत समाज ॥

( २१ )

जिनका प्रति हम सभ कएलहुँ मृदुस्नेह, प्रेम, श्रद्धा, उद्गार,  
कूर काल अरु नियति चक्र पड़ि भोगि न सकला जीवन-सार ।  
मात्र चारि मधु-चषक पीबि मधुशाला तजि ओ सभ चललाह;  
रहल अतृप्त तृषा-अभिलाषा, सुप्त अन्त विश्रामागार ॥

( २२ )

जे थल ओ सभ छोड़ल, हम सभ करिअ ओतए आनन्द विलास,  
आइ प्रकृति बासन्ती मधुमय हृदयक बिच आनए उल्लास ।  
हमहुँ सभ चल जाएब अवनितल-शय्या पर सूतब एकान्त,  
आन करत उत्सव किछुदिन, पुनि हमरहि पर चिर शयन निवास ।



( २३ )

अरे ! प्राप्त जे किछु एखनो, कए लिअ' ओकर उपभोग,  
मरिकए माटि मिलक पहिनहि, कर सुभग तनक उपभोग ।  
माटिक बनल, मिलत पुनि माटिहि, माटिक तर विश्राम-  
बिनु गायक, संगीत सुरा बिनु, चिर एकान्तक भोग ।

( २४ )

वर्तमान सुख भोग हेतु जे छथि उद्यत करइत व्यापार,  
आओर भविष्यक आशा-पथ दिशि हेरि सहथि जे कष्ट अपार ।  
तिमिरक भवन शिखर पर चढ़िकए देअए मुअज्जिन नित्य अजान  
अरे मूर्ख ! नहि एतए न वा परलोकहिं मे पएबे उपहार ॥

( २५ )

लोक तथा परलोक विषयमे करइत कत शास्त्रार्थ विचार,  
विज्ञ, सन्त-ऋषि-मुनिगण, मूर्ख प्रमत्त सङ्ग भए एकाकार-  
चलथि मृत्युपथ ! रहि जाइत अछि हास्य अवज्ञास्पद सिद्धान्त,  
अरुहुनकर मुख वन्द करए भरि माटि, देखु जगतक व्यवहार ॥

( २६ )

आउ प्रिये खैयाम सङ्ग, जनु सुनु की कहइत छथि विद्वान,  
एक बात निश्चित एतबे जे, जीवन अछि अति द्रुत गतिमान ।  
छल प्रवञ्चना भूठ आन सभ, केवल सत्य बुझिअ ई बात,  
एक बेरि भए कुसुम प्रफुलित होअए शुष्क, म्लान, अवसान ॥



( २७ )

युवाकालमे हमहुँ जाए पंडित सस्तक लग बेरि अनेक,  
पढ़ल शास्त्र, अरु सुनल हुनक कत तक ज्ञान, वैराग्य, विवेक;  
किन्तु युक्ति शास्त्रार्थ चक्रमे पड़ि घुरि फिरि हम भेलहुँ बहार,  
देखल-मात्र दोआरि जतएसंगेल छलहुँ, अरु पथ अछि एक ॥

( २८ )

हुनके सभक संग हम ज्ञानक बीज वपन कएलहुँ संसार,  
ओकर बृद्धि हित कएलहुँ यत्न, तथा सोचल दए श्रम जलधार;  
आओर अन्तमे-काटि ओकर फल-शस्य मात्र ई आएल हाथ,  
पानि जेकाँ आएल छी जगमे-पवन समान जाएब ओहिपार ॥

( २९ )

आएलहुँ किए जगतमे हम, अछि एकर न किछुओ ज्ञान,  
आओर कतएसँ अविरल चलइत जलधाराक समान !  
पुनि एहिसँ बाहर भए जाएब कतए-कहाँ-नहि जानि,  
निरुद्देश्य ई गति, जनु बहइछ मरु प्रास्तर पवमान ॥

( ३० )

पूछल नहि हमरा, ठकेलि कए कए आनल एहि गाम,  
फेरि एतएसँ बिना विचारे, फेकत दोसर ठाम !  
प्रिये, ठारु, मदिरा पिआउ, अतिशय मदहोश बनाउ,  
जहिसँ स्मरण रहए किछुओ नहि, ई अशिष्ट विधिवाम ॥



( ३१ )

पृथ्वीतलसे ऊपर उठिकए सातो लोक भेलहुँ हम पार,  
ओहि सुदूर शनि क्रूर ग्रहक सिंहासन पर कएलहुँ अधिकार ।  
पथमे विश्वक जटिल समस्या-ग्रन्थि-विमोचन कएल अनेक,  
किन्तु रहल अज्ञात मनुष्यक जन्म, मरण, अरु भाग्य विचार ॥

( ३२ )

एक द्वारि छल रुद्ध, खोलि सकलहुँ नहि जकर केवाड़,  
एक गूढ़ आवरण, दृष्टि कए सकल न जकरा पार ।  
किछु अस्पष्ट सुनल किछु क्षण ले-‘हम तो’ विषयक बात;  
पुनि तीरब, सभ बन्द भेल, ओ हो ‘हम तो’क विचार ॥

( ३३ )

ग्रह नक्षत्र ज्योतिसें भासित नभ-मण्डलकेँ कए आह्वान,  
भार्तस्वरसें पूछल-‘देव ! ‘बिकल, असहाय मनुज सन्तान-  
अन्धकारमे भटक रहल अछि;—अछि किछु ओकर पृथक आलोक ?’  
आएल उत्तर नभबाणीमे-‘अन्ध भक्ति, विश्वास-निदान !’

( ३४ )

तखन एहि भाटिक ध्याली दिशि भुकलहुँ हम सविषाद,  
जीवन-तथ्य-रहस्य बुझिअ यदि पाबि एकर रस स्वाद ।  
अधर स्पर्श करितहि ई बाजल,—जाधरि जीवन, मीत !  
कर सधुपान, मृत्युपर नहि पुनि आएब, बुभु अविवाद ॥



( ३५ )

सोचिअ हम, ओ प्याली जे मृदु कहल, देल, सुविचार  
छल होएत जीवित, करइत क्रीडा, आनन्द विहार ।  
अहा ! आइ जे बुझक अधर हम चूमल अछि, को जानि  
कत मृदु केलि सरस चुम्बनक कएल मधुमय व्यापार !

( ३६ )

सान्ध्य समय ओहि दिन हम देखल, नेलहुं जखन ब'जार-  
भीजल माटिक गोलाकेँ सानए, पीटए, बहुवार  
एहने प्याली बनबए ले; जनु लटपटाएल सन जीह,  
गलित शक्ति ओ सिसकि कहै अछि- 'हलुके, भाई कुम्हार !'

( ३७ )

अरे, भरू प्यालीमे मदिरा, व्यर्थ शौच करू बन्द,  
समयक बालु पाएर तर बहइछ, जीवन बह स्वच्छन्द ।  
विगत काल्ह कालक मुख पइसल, आओत जे, नहि जात,  
की चिन्ता यदि आजुक मधुमय समय बितए सानन्द !

( ३८ )

क्षणभरि ले भेटल अवसर एहि प्रलयंकर मरु प्रान्त,  
क्षणभरिमे जीवन निर्भर रस पीबि करक चित शान्त ।  
महाशून्य अरुणोदयमे तारक दल होअ' विलीन,  
करू शीघ्रता, देखु यात्रिगण धाएलक पथ विभ्रान्त ॥



( ३९ )

ई अनन्त चेष्टा कहिआ धरि, पुनि अम करब कठोर,  
कहिआ धरि ई इतस्ततः, घए कलह मिलायक डोर !  
उपवनमे अंगूर फड़ल जे, पाबि करिअ संतोष,  
जे न प्राप्त, अथवा कटु फलले, व्यर्थ करब मन घोर ॥

( ४० )

बूमल अछि ई बात बन्धुगण ! कत दिनसँ उत्सवक हिलोर  
चलइछ हमर भवनमे प्रतिदिन, नव विवाह, आनन्द विभोर ।  
बृद्धा, बन्ध्या, तर्कप्रगल्भा नारीकेँ दए देल तलाक,  
अंगूरक दुहिता, मधुवाला प्रेयसिकेँ लेलहुँ निज कोर ॥

( ४१ )

अस्ति नास्ति दर्शनक गूढ तत्त्वक हम करितहुँ बहुविधि अर्थ,  
गणित खगोलक सूक्ष्म विवेचन करबामे हम छलहुँ समय ।  
किन्तु कएल यदि किछु समुचित चिन्तन, जिज्ञासा सफल विचार  
—सुरा समान न किछु गम्भीर बुझाएल, आन विषय सभ व्यर्थ ॥

( ४२ )

किछुए दिन पहिने मदिशालय-द्वारि खोलि, अएला' अनजान,  
देवदूत सन आकृति केओ चुपचाप, जखन दिवसक अवसान ।  
हुनक कान्ह पर भरल कलश छल, कहलन्हि हमरा निकट बजाए,  
—एकर स्वाद बुझु, हम रस चाखल,—छल ब्राह्मणस मदिश महान ॥



( ४३ )

कत पथ सम्प्रदाय जगमे मतभेद कलह युत करए प्रचार,  
सभके मूक करए निज अद्भुत तर्कक बल अंगूर उदार ।  
ई विदग्ध-रस सिद्ध चतुर जे क्षणमे आनए परिवर्त्तन,  
अति निकृष्ट जीवनक धातु शीशकके करए स्वर्ण साकार ॥

( ४४ )

आस, दुःख, वेदना, ताप आदिक जत शैत्य दुरुह-  
आत्माके आक्रान्त करए रत्न अत्याचारक ब्यूह ।  
ई द्वाक्षा-महामुद प्रतापी विश्वजयी सम्राट्,  
लए निज-सिद्ध तीक्ष्ण-असि करमे, काटए शत्रु समूह ॥

( ४५ )

छोड़ि द्विअ' पण्डित सभके जे करथि अनेक विवाद,  
हमरा नहि सम्पर्क जगत केरि कलह द्वेष अविवाद ।  
चलू कतहु एका-त जगह, जत कोलाहलसँ दूर,  
हँसब हमहुँ हुनकापर, जे उपहास करथि, परिवाद ॥

( ४६ )

बाहर भीतर, ऊपर-नीचा, चारु विशि-सभठाम-  
खेल होइछ, जनु इन्द्रजाल, माया-प्रकाश-वनश्याम ।  
नभ मण्डल पातिलमे राखल सूर्य दीप चक्रास्त,  
छाया चित्र विचित्र जीव जग नाचि रहल अभिराम ॥



( ४७ )

यदि ई अघर मधुर चुम्बन, अरु अहंकर तरल मधुपान,  
सभ वस्तुक अस्तिम परिणति सन होअ चुन्य, अवसान ।  
सोचु तखन, कल्पना करु, जावत धरि जीवन, प्राण,  
जे अहं छी, होएब ओएहु पुनि चुन्य न किछु व्यवधान ॥

( ४८ )

जा धरि सरिता तटपर विकसित पाटल पुष्प सहास,  
आउ, अपन खैयाम सङ्ग, मधुपान करु सोल्लास ।  
खेने आनए कालदूत पुनि विषम गरल भरि पात्र,  
ओकरो करु स्वीकार, न किंचित, बिचलित होउ उदास ॥

( ४९ )

सतरंजक पाटीसन, रात्रि-दिवस-धर-युत पसरल संसार,  
जीव-मात्र गोटी लए खेलए, कर्म नियति इच्छा अनुसार ;  
चल एतए, काटए ओकरा पुनि, मातु करए, पाबए आनन्द,  
कमशः सभ कालक पेटोमे लए समेटि जाइछ अविकार ॥

( ५० )

विनु 'हँ' 'नहि' कहनहि ओंछाएल घुरए गेन सभठाम-  
जतए जेना खेडा मारए, ओ जाए दहिन वा वाम ।  
तहिना एहि भूतल पर अहंके पटकल अछि ओ देव,  
जनइत अछि ओ सभ किछु, केवल ओ जानए परिणाम ॥



( ५१ )

बपल लेखनी लए कपार पर लिखइत अछि जे लेख,  
घुरि नहि देखए—की लिखलक, नहि अहँक सुबुद्धि, विवेक,  
ज्ञान करत व्याघात, न ओ काटत पाँती वा शब्द,  
अविरल अश्रु बह्योतहुँ अहँ ओ सकब स अक्षर एक ॥

( ५२ )

उनटा प्याली सदृश—कहिअ जकरा हम सभ आकाश,  
अहितर विवस भार वहि जीविअ, त्यागिअ जीवन-श्वास,  
ओहि दिशि जनु जाचना भावसँ देखिअ, हाथ हठाउ,  
स्वयं नपुंसक निरालम्ब ओ घूमए सतत निराश ॥

( ५३ )

पृथिविक प्रथम धूलिकण संज्ञहि अन्तिम मनुजक रजके सानि,  
रोपल बीज आदिअहिमे जे अन्तिम फलक रूप संधानि ।  
सृष्टिक प्रथम उषा-पट परओ अंकित कएलक सभ विधि नेख,  
कयामतक संख्याबेला जे पढ़ल जाएत सभ कर्म बखानि ॥

( ५४ )

कहइत छी ई बात—जखन ओ पुरुष छोड़ि निज लक्ष्यस्थान,  
उत्थलित सूर्य-हृदय चढ़ि बढइत फेँकल कत अह नक्षत्र महान—  
ओतहि जतए हमरा सभहिक बनइत छल आत्मा, जीव, शरीर,  
ई निश्चित !—जन्महुँ सँ पहिनहि, बनए भाग्य, अरु कर्म विधान ॥

पद सं० ५३—कयामत—मुसलमान सभक अनुसार प्रलयक बाद  
कर्मफल-न्यायक दिन ।



( ५५ )

अंगूरक नव तन्तु रहए यदि लपटल हमर शरीर,  
नहि सूफीक अवज्ञा हमरा विचलित करत, अधीर ।  
बनि सकैछ कुंजी-हमरो जीवन कुधातुसँ भाइ ।  
खोलत बन्द केबाड़ जाहि पर पटकथि माथ सुधीर ॥

( ५६ )

बूझल अछि जे अन्तः सत्यक ज्योति करए शुभ प्रेम प्रकाश,  
अथवा क्रोधानलमे भस्मीभूत करए सभ जीवन आस;  
मदिरालयमे एक 'झलक' यदि देखी ओकर मनोहर रूप,  
की मन्दिर, की मस्जिद ! ओकरा बिनु दौड़ब भए व्यर्थ निराश ॥

( ५७ )

ओह ! जाहि पथपर हम चलितहुँ अपने मनसँ जीवन काल  
खोचल कते खाधि ओहिपर अहँ छीटल काँट, पसारल जाल !  
की नहि पहिनहि कएल नियन्त्रण जीवन गतिके बन्धन बाहि,  
एखन फँसाएब हमरा ? पतनक कारण गढ़ि पापक जंजाल ॥

( ५८ )

अरे, अहाँ, जे तुच्छ मादिसँ मनुज-कुलक कएलहुँ निर्माण  
आओर अदन उपवनमे राखल सर्प, डँसल जे विष अज्ञान;  
निस्सहाय मानवक भालपर जे अछि पाप कलंकक लेप-  
भागी सबक अही, मानवसँ क्षमा माडु, कर क्षमा प्रदान ॥

पद सं० ५८—अदन...सर्प...विष अज्ञान ।

बाइबिलक अनुसार, आदि पुरुष आदम, आ आदि स्त्री ईभक संग  
'अदन उपवन' मे एक शैतान-दुष्ट सर्प-सेहो छल । ओएह सर्प हिनका  
सभकेँ फुसिआए अधलाह-ईश्वरक आदेशक विरुद्ध-रास्ता पर अनजानक ।



( ६३ )

केओ नहि उत्तर देल, मौन सभ, किन्तु क्षणक पश्चात्  
बाजल एक कुरूप पात्र,—जे पड़ल रहए ओहिकात,—  
हमर विकल आकृति-भंगीके देखि हँसए सभ लोक,  
हमरा बनवै काल कुलालक काँपि गेल की हाथ ?

( ६४ )

टोकल अपर, लोक कहइछ, अछि कर्कश एक कलाल,  
मुह पर ओकर कालिमा पोतल नरकक धूआँ जाल ।  
सुनइत छी, अति कठिन परीक्षा होएत सभहिक भाइ !  
इह नहि, सब बढ़िने होएत, छथि स्वामी अपन कुपालु ॥

( ६५ )

दीर्घश्वास लए, व्यथित हृदयसँ बाजल दोसर पात्र,  
चिर विस्मृति, अबहेलासँ भए गेल शुष्क मम गात्र ।  
किन्तु होइछ—हमरा एहि जीवनमे पुनि गति संचार  
आबि जाएत, यदि परिचित मधुरस पड़ए एक बेरि मात्र ।

( ६६ )

एहि रूपे सभ पात्र ततए करइत छल जखन विचार,  
सावत केओ देखल नभमे लव इन्दु बलय-आकार ।  
सभ छल उत्सुक, कहल ढकेलि परस्पर सुनु है बन्धु !  
परमर करए चडैश, भरिआ अनइछ भोजक भार ॥



( ६७ )

आह ! जीवनक अन्तिम क्षणमें ब्राह्मा-सुरस लगाएब ठोर,  
प्राणमुक्त तनके मंदिरासँ स्नान कराएब गन्ध विभोर ;  
अरु अंगूरक लता पत्र लेपटाए भाँपिकए हमर शरीर,  
गाड़ि देब प्रिय ! कतहुँ मधुर उपवनक अवनितल कोमलकोर ।

( ६८ )

बसुधोतरमे पड़ल हमर रज-क्षारक मृदु उच्छ्वास,  
पवनसङ्ग उपवनक प्रान्तमे फेकत सौरभ पाश—  
जहिसँ केहनो धर्म धुरन्धर मुल्ला ओहि पथलीन,  
अनायास फँसि बनेत मंदिर मधुमन्ध-विलासक वास ॥

( ६९ )

वास्तवमे आदर्श बूझि जिनका प्रति कएल प्रेम साकार,  
ओएह लोक बिच हमर नाम यश नाश कएल, कए छल व्यवहार ।  
अरजल मान प्रतिष्ठा सभकेँ क्षुद्र एक प्यालीमे बोरी,  
हमर स्थाति गौरव लए बेचल केवल गाबि गीत निस्सार ॥

( ७० )

सत्य बात, परिताप कएल हम, खएलहुँ शपथ अनेक,  
किन्तु, किन्तु को छल — तहिआ हमरा शुभ ज्ञान विवेक !  
आओर, तखन आएल कुसुमक माला लए मधुर बसन्त-  
क्षणभरिमे सभ ध्वंस भेल, जत छल ब्रत नियमक टेक ॥



( ७१ )

यद्यपि ई मदिरा घातक भए हमरा नास्तिक देलक बनाए,  
आओर हमर यश, मान, प्रतिष्ठा-रूप-वसन सभ लेल हटाए;  
हो तथापि आश्चर्य ! देखि मधुबिकेता जखन करए विनिमय-  
आघो मूल्य न पाबए, अनुपम मधु मदिरा सन वस्तु लुटाए ॥

( ७२ )

अहो ! विकच पाटल प्रसून सङ जाए सरस ऋतुराज वसन्त,  
मधुर यौवनक सुरभित स्नेह भरल गीतक हो सहसा अन्त !  
तरु शाखा पर बैस करे छल जे कोकिल, बुलबुल कल गान,  
के जनैछ ओ आबि कहाँसँ पुनि चल गेल कहाँ हा हन्त ॥

( ७३ )

आह ! प्रिये, हम अहँक सङ्ग मिलि विधि-विरुद्ध रचितहुँ षड्यंत्र,  
करगत करबाले जगतक दुख-दुन्दु वेदना दायक-यन्त्र ।  
तोड़ि ताड़ि टुकड़ी टुकड़ी करितहुँ हम ओकरा नष्ट समूल,  
आओर बनबितहुँ नूतन सभ किछु, मन इच्छा अनुसार स्वतन्त्र ॥

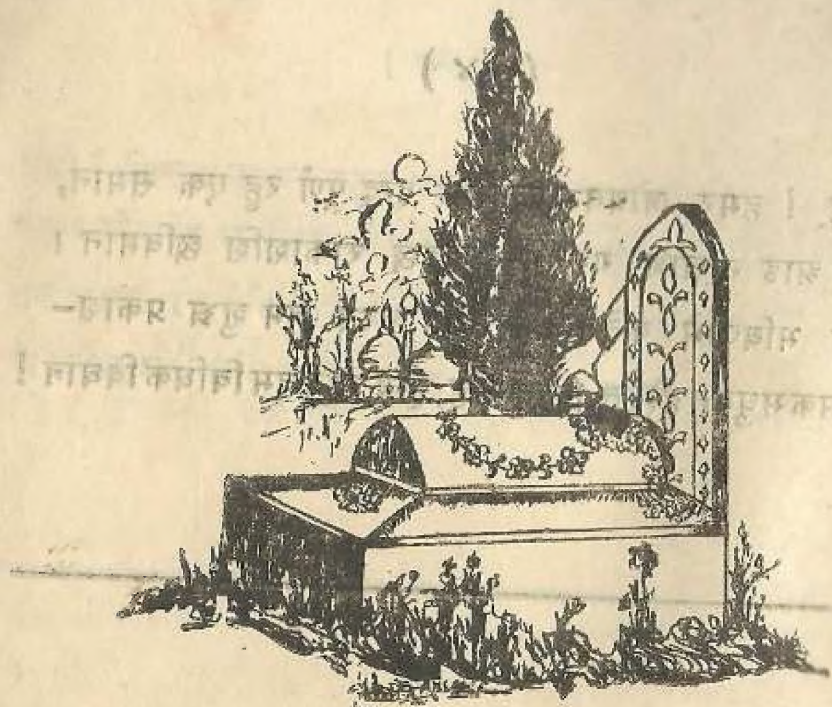
( ७४ )

आह ! हमर जोवन-उल्लासक इन्दु पूर्ण रहु एक समान,  
देखु आइ नीलाभ गगनमे—उगइछ राकाशशि छविमान ।  
पुनि भविष्यमे कतेबेरि ई उगत करत जम शुभ्र प्रकाश-  
चकमक मधुवन होएत, किन्तु नहि, हाय रहब हम विधिक विधान !



( ७५ )

आओर सुकोमल दूभिक ऊपर बैसल तारावलिक समान  
 अतिथि वृन्द विच द्योतित पद, चलइत सस्मित, करइत मधुपान,  
 आबी जखन ओतए प्रेयसि, हम जतए पान करितहुँ सानन्द,  
 खाली प्याली उनटि देव बस, राखि पूर्व-सुख-संगक ध्यान ॥



॥ समाप्त शुद्ध ॥